हनुमन्नाटकम् में व्यावहारिक, राजनीतिक, सामाजिक मूल्यों की प्रासंगिकता

डॉ. मूलचन्द
प्रवक्ता–संस्कृत
राजकीय लोहिया महाविद्यालय,
चूरू

मूल्य का अर्थ – खरीदने योग्य, जो वस्तु के बदले में दिया जाने वाला धन, कीमत, दाम, वेतन, पारिश्रमिक उपयोगिता इत्यादि हो सकता है। साहित्य के सन्दर्भ में मूल्य का अर्थ – रचना के भीतर वर्तमान रहने वाला ऐसा उद्देश्य जो उसे किसी सामाजिक आदर्श व्यक्तिगत उच्चता आदि से जोड़ा जा सकता है।

व्यावहारिक मूल्य – देहाभिमानी मनुष्य के लिए शरीर रक्षण ही आद्य मूल्य बनती है और विविध शारीरिक आवश्यकताएं और अपेक्षाएं इस मूल्य को व्यक्त करती हैं। अन्न पान, वस्त्र और आच्छादन, अस्त्र और उपकरण, उत्पादन श्रमविभाजन, विनिमय आदि व्यवस्था, इन सभी में शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन निहित हैं।

आत्मरक्षा के समान ही प्रजोत्पादन और पालन एवं उस पर आधारित कौटुम्बिक जीवन का महत्व है। आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति आत्मरक्षा का एक आयाम है परिवार का पालन उसका दूसरा आयाम है। शरीर, परिवार आदि की आक्रमण से रक्षा के लिए कानून और दण्डविधान उसका तीसरा आयाम है। जैव आवश्यकताओं में उत्पन्न होकर व्यावसायिक मूल्य आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक मूल्यों में विकास लाभ करते हैं।

व्यावसायिक मूल्य कालिक और भोगात्मक होते हैं। भोगात्मक मूल्यों को पाने में अपने को खोना होता है। वे मूल्य एक अनित्य जीवन के अंग रूप में ही मिलते हैं।

राजनीतिक मूल्य – लोक में साम, दाम, दण्ड, भेद अथवा छल प्रपंच के द्वारा दूसरों को अपनी संकल्प सिद्धि का साधन बनाना राजनीतिक व्यवहार कहा जाता है।

''प्लेटो ने राजनीतिक व्यक्ति की तुलना मछुआरे से की है और कहा है कि जो अपना जाल बिछाकर प्रलोभन देकर चतुराई और खींचतान से शिकार करता है' (मूल्य मीमांसा– पृष्ठ–1)

हनुमन्नाटकम् में व्यावहारिक मूल्यों के प्रसंग बहुत हैं, यथा– रावण को अपने शरीर का अभिमान है परन्तु जब मन्दोदरी कहती है तो अपने शरीर की रक्षा के विषय में सोचता भी है।

राजा दशरथ ने श्रीराम को 14 वर्ष का वनवास तो दे दिया परन्तु पुत्र के पालन– पोषण को लेकर दशरथ ने अपने प्राण तक छोड़ दिये। इस प्रकार नाटक में व्यावहारिक मूल्य, सामाजिक मूल्य, राजनीतिक मूल्य, आदर्श मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य, प्राकृतिक मूल्य इत्यादि बहुत

से मूल्यों के प्रसंग हैं परन्तु प्रस्तुत पत्र में सभी का उल्लेख करना सम्भव नहीं है। अतः मुख्य रूप से व्यावहारिक, सामाजिक व राजनीतिक मूल्यों का ही वर्णन किया जा रहा है।

हनुमन्नाटक 14 अंकों का महानाटक श्री दामोदर प्रसाद मिश्र द्वारा संकलित है जो महाराष्ट्र में प्रचलित है। जनश्रुति है कि कपिपुंगव हनुमान् ने ही इस नाटक की रचना करके पहाड़ के ढोकों पर खोद दिया था। जब वाल्मीकि मुनि ने उसे पढ़ा तो उन्होंने विचार किया कि अत्यन्त विशदरूप से लिखा गया है। यदि यह ग्रन्थ जनता के नेत्र पटल के सम्मुख आ जायेगा तो उनकी बनायी हुई रामायण का आदर कम हो जायेगा यह सोचकर उन्होंने वानराग्रगण्य से कह सुनकर उन शिलाओं को समुद्र में डलवा दिया। इस सन्दर्भ में दो सिद्धान्त प्रचलित है एक के अनुसार राजा विक्रमादित्य ने उसे समुद्र में से निकलवा कर मोम पर उसके वर्णों को मुद्रित करके प्रकट किया। दूसरा सिद्धान्त है कि राजा भोज ने समुद्र में से उन शिलाओं को निकलवा कर उस लुप्तप्राय ग्रन्थ का अपने सभा पण्डित श्री दामोदर मिश्र द्वारा जीर्णोद्धार करा दिया था।

हनुमन्नाटक में रामचरितमानस व रामायण की तरह श्री रामचन्द्र का चरित्र चित्रण किया गया है। नाटक की मुख्य विशेषता यह है कि अपवाद स्वरूप ही गद्य है व सम्पूर्ण ग्रन्थ पद्यात्मक ही है। एक विशेष और है पद्यों में भी पद्यों के चरणों में संवादात्मक शैली है। चूंकि नाटक में श्रीराम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान् जैसे पात्र हैं तो मानव मूल्य होना एक स्वाभाविक है। अतः इस पत्र में उन्हीं मानव मूल्यों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालने का अल्प प्रयास है।

वचन का पालन –

वर्तमान में चाहे सामान्य व्यक्ति, राजा, मंत्री, अफसर, देश, पड़ोसी देश, अपनी बात पर अडिग नहीं रहते हैं तथा अपनी ही कही हुई बात से मुकर (बदल) जाते हैं। हनुमन्नाटक में कैकेयी के द्वारा राजा दशरथ से भरत का राज्याभिषेक व श्रीराम को वनवास मांगा तो दशरथ ने पूर्व में दिए हुए वचन का पालन किया।

रामं कामाग्रजमिव ..... वचनं हा बभाषे तथेति (हनुमन्नाटक 3.4)

सत्ता से बड़ा भाई प्रेम – आज के युग में भले ही हम उत्तर प्रदेश की बात करें या सभी राज्यों की बात करें एक ही परिवार के यदि चार पांच सदस्य हैं तो अलग–अलग पार्टियों में रहते हैं। व्यापार की चर्चा करें तो अनिल अम्बानी व मुकेश अम्बानी के पास पैसों की कमी नहीं है। पिछले वर्षों में दोनों में प्रेम के स्थान पर आपसी विवाद ही मिडिया व सोशल मिडिया के माध्यम से देखने को मिला।

नाटक में भरत व श्रीराम का अटूट स्नेह दिखाया गया है जब भरत को पता चला कि राम को वनवास मिला है तो भरत स्वयं कहते हैं हे पिता! हा माता! ओः जलती हुई आग भले

मुझे भस्म कर दे वज्र, पहाड़ तीर, तलवार चाहे मुझे मथ डाले – इन सब (पीड़ाओं) को बहुत आसानी से यह भरत बर्दाश्त कर सकता है, लेकिन हाय! रामचन्द्र के चरणों का वियोग नहीं सहन कर सकता।

हा तात! मातर हह! ..... रामचन्द्रपदयोर्न पुनर्वियोगम्।। (हनुमन्नाटक 3.5)

भरत ने यहां तक कहा कि सब अनर्थों का मूल मैं ही हूं

तव धराधीशता, हा! हतोऽस्मि (हनुमन्नाटक 3.8)

पुत्र स्नेह में प्राण छोड़ना –

सम्प्रति पिता पुत्र में सम्पति व सत्ता को लेकर कोर्ट में केस चल रहे हैं जबकि दशरथ ऐसे पिता थे कि पुत्र को वनवास तो दे दिया परन्तु इस (वनवास) को सहन न सके परिणाम स्वरूप अपने प्राण ही त्याग दिए –

निःश्वस्य दीर्घतरमुच्छ्वसितं न भूयः (हनुमन्नाटक अंक 3.7)

अभिवादन – मनुस्मृति के द्वितीय अध्याय के पद्य नं. 121 में कहा

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्।।

वर्तमान में परिवार टूटने के कारणों में अभिवादन भी कहीं न कहीं कारण हो सकता है। क्योंकि आज के दोर में अभिवादन करना अपने आपका अपमान सा महसुस करते हैं जबकि श्रीराम को वनवास मिलने पर भी श्रीराम, सीता, लक्ष्मण ने पिता को प्रणाम किया, कौशल्या, सुमित्रा को प्रणाम किया तत्पश्चात् वन की ओर प्रस्थान किया – (हनुमन्नाटक 3.11)

पिता की आज्ञा का पालन –

आज घर, परिवारों, देश, विदेश, राजनीतिक पार्टियों की यदि हम चर्चा करें तो पिता पुत्र में प्रायः मनमुटाव दिखाई देता है। पिता की बात को पुत्र नहीं मानता, पुत्र की बात को पिता नहीं मानता परन्तु हनुमन्नाटक में ऐसा प्रसंग आता है कि श्रीराम ने पिता के आदेश (वनवास) को सहर्ष स्वीकार कर लिया। (हनुमन्नाटक 3.4)

स्त्री का सम्मान करना – वर्तमान में भाभी व देवर के रिस्ते को कलंकित होते हुए मिडिया के माध्यम से प्रायः देखते, सुनते व पढ़ते रहते हैं, परन्तु हनुमन्नाटक में सुमित्रा ने लक्ष्मण को समझाते हुए कहा कि आप रामचन्द्र को पिता के समान मानना, सीता को मेरे (माता) के समान जानना और वन को अयोध्या समझना।

''रामं दशरथं विद्धि मां विद्धि जनकात्मजाम् (हनुमन्नाटक 3.9)

रावण द्वारा सीता का अपहरण करने पर सीता ने किष्किन्धा पर्वत पर अपने आभूषणों को फेंक दिया था। श्री रामचन्द्र जी सीता को खोजते हुए उस पर्वत के पास पहुंचे वहां हनुमान् द्वारा ये आभूषण भेंट किये जाते है। श्रीराम ने जब लक्ष्मण से पूछा कि आभूषण जानकी के ही हैं किसी दूसरे के नहीं। भाई लक्ष्मण, तुम भी तो पहचानते हो जरा गौर से देखो तो सही (**हनुमन्नाटक 5.35**)। लक्ष्मण आसू भर कर कहते हैं।

कुण्डले नैव जानामि नैव जानामि कंकणे।

नूपुरावेव जानामि नित्यं पादाभिवन्दनात्।। (हनुमन्नाटक 5.36)

अर्थात् मैं न तो कान की बिजुली पहचानता हूं और न हाथ के कड़ों को पहचानता हूं। मैं तो नित्य प्रति चरणों पर मस्तक नवाने के कारण, पायलों (पायजेबों) को ही पहचानता हूं।

नीतिनिपुण राजा ही सफल प्रशासक –

राजा व मंत्री देश का हो या विदेश का हो जनता को राजा गलत लगता है तो पाकिस्तान जैसे देशों में तो आये दिन राजा को हटाया जाता ही है। भारत में भी मुख्यमंत्रियों को विधायकों द्वारा हटाया जाकर दुसरा नया नेता व मंत्री बनाया जाता है। इसी प्रकार घूसखोर अधिकारी को भी हटाया जाता है।

नाटक में कहा कि नीति निपुण (व्यवहार कुशल) राजा भी पदच्युत किये हुए अधिकारियों को अन्यत्र नियुक्त करता हुआ, पैसे वालों से कर वसूल करता हुआ, छोटे अधिकारियों को तरक्की देता हुआ, ओछे प्रजा–सन्ताप–कारक घूसखोर को अधिकार से पृथक् करता हुआ, गुट बनाने वाले अधिकारियों को अलग–अलग करता हुआ अत्यन्त उच्च पदासीन दुरधिकारियों को निम्न पद पर नियत करता हुआ, नीचे पड़े हुए को क्रमशः ऊपर उठाता हुआ, चिरकाल तक भूतल पर राज्योपभोग करता है।

उत्खातान् प्रतिरोपयन् ..... राजा चिरं नन्दते।। (हनुमन्नाटक 9.35)

श्रेष्ठ शिक्षक – श्रेष्ठ शिक्षक की हर समय हर कोई अच्छाई ही कहना चाहेगा। श्रीराम को भी नाटक में वानरों का कुल गुरू (पूजनीय शिक्षक) कहा है।

देवाऽऽज्ञां देहि राज्ञां त्वमसि कुलगुरूः शोषये किं पयोधि (हनुमन्नाटक 6.5)

सर्वमंगल कामना –

भारतीय संस्कृति की विशेषता है कि वह सभी का मंगल चाहती है अर्थात् ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' इसी प्रकार नाटक में सूर्य के समान सूर्य–कुल केतु रामचन्द्र जी सबकी रक्षा करें।

''पायात् सिन्दूरपूर्वाचवलशिखर शिरः शेखरो रामचन्द्रः'' (11.16)

निष्कर्ष :– हनुमन्नाटक एक महानाटक है जिसमें श्री रामचन्द्र का चरित्र चित्रण किया गया है। इस ग्रन्थ में वचन का पालन करना, राज्यसता से बड़ा भाई प्रेम पिता की आज्ञा का पालन करना, पुत्र स्नेह में प्राण त्याग, अभिवादन, स्त्री सम्मान, भ्रष्ट अधिकारी व मन्त्रियों को पदच्युत करना इत्यादि मानव मूल्यो का विवेचन किया गया है। वर्तमान में इन मूल्यों की समाज में प्रासंगिकता है। अतः ये मूल्य रचना के भीतर वर्तमान है जिनको आदर्श व्यक्तिगत व सामाजिक क्षेत्र में जोड़ा जा सकता है।